पाठ–11

प्रेरक जीवन

संकलित

पाठ परिचय

मनुष्य जीवन का कोई मानक या आदर्श नहीं हो सकता, लेकिन जिन महान व्यक्तियों ने जीवन को सुगम और श्रेष्ठ बनाने के लिए संघर्ष किए हैं, उनके साहस और संकल्प को पाथेय की तरह लेकर नए रास्ते बनाने के लिए आगे बढ़ा जा सकता है। संकलित अध्याय में देश की सीमा रक्षा और विदेशी आक्रमण से संघर्ष करते हुए शहीद हुए सिन्धुपति महाराज दाहिर सेन तथा आधुनिक विज्ञान और तकनीक से भारत को सशक्त बनाने वाले मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम के जीवन–चरित्र को तथ्यात्मक रुप से प्रस्तुत किया है। इसका उद्देश्य इन महापुरुषों के परिवेश को समझकर राष्ट्र की रक्षा और विकास के लिए उन्होंने जो त्याग, बलिदान तथा कर्मयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया है उसको आत्मसात कराना है। यह प्रेरक जीवन भावी नागरिकों को अभिप्रेरित कर पथ प्रशस्त करेगा।

प्रेरक जीवन 1

सिन्धुपति महाराज दाहिर सेन

भारत का पश्चिमी सीमा प्रांत सिंध प्रारंभ से ही विदेशी आक्रांताओं के हमलों का शिकार रहा है। भारत भूमि पर बुरी नजर रखने वाले ईरानी, ईराकी, यवन, सिंध के रास्ते ही भारत भूमि में प्रवेश करने का कुत्सित प्रयास करते रहे हैं, मगर जिन जांबाजों ने आतताइयों को नाकों चने चबवाए, उनमें सिंध देश के महान सपूत शूरवीर और प्रतापी महाराजा दाहिर ने स्वयं तो प्राणों की कुर्बानी देकर देश की रक्षा की, अपितु उनके पूरे परिवार ने देश की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

छठी शताब्दी में सिंध पर देवाजी वंश के राजा रायसाहरस का शासन था। ईरान के शाह नीमोज ने आमने–सामने के युद्ध में जब देखा कि पार पाना मुश्किल है तो उसने छल कपट का सहारा लेकर राजा साहरस को घेर कर हत्या कर दी। युद्ध भूमि में अपने पिता के वीर गति प्राप्त करने का समाचार जब युवराज राय साहसी को मिला तो वह शेष सेना लेकर युद्ध भूमि में आ डटा, सिंधी सैनिकों की बहादुरी से नीमोज प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका और बिना निर्णय के युद्ध क्षेत्र को छोड़कर अपने देश लौट गया । युवराज राय साहसी ने सिंध का शासन संभाला। वीर प्रतापी राजा साहसी राय का कोई उत्तराधिकारी पैदा नहीं हुआ। लिहाजा उनके निधन के बाद उत्तराधिकार में चचराय ने राज्य संभाला ।

दाहिर उसी चचराय का वीर पुत्र था। 672 ई. में चचराय का देहान्त हो गया। चच की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई चन्दन सिन्ध का शासक बना। आठ वर्ष बाद उसकी भी मृत्यु होने के बाद दाहिर सेन विशाल साम्राज्य के अधिपति बने। दाहिर ने पिता के राज्य को अच्छी तरह सम्भाला। उनके राज्य

में प्रजा खुशहाल थी। प्रदेश धनधान्य से समृद्ध था । दाहिर के राज्य की राजधानी 'अलोर' थी। यह बहुत सुन्दर और समृद्ध शहर था।

अरबों ने लूट–खसोट की नीयत से भारत पर हमला किया और उनमें से अधिकांश हिन्दुस्तानी तलवार की भेंट चढ़े। अरबी सरदार हज्ज़ाज ने अपने दामाद मुहम्मद बिन कासिम को भारी सैन्य बल एवं शस्त्रों के साथ सिंध पर हमलावर बनाकर भेजा। कासिम मकराना, कन्नाजबुर तथा अरमाइल पर विजय प्राप्त करता हुआ 711 ई. में सिन्ध के प्रसिद्ध बन्दरगाह नगर देवल वर्तमान कराची पर आ धमका। देवल परकोटे में एक विशाल मन्दिर था, उसके गुंबद पर केसरिया पताका लहरा रही थी। यह पताका देवल के सैनिकों और नागरिकों की प्रेरक शक्ति थी। दुर्भाग्यवश मन्दिर के पूजारी ने यह रहस्य कासिम तक पहुँचा दिया और कासिम ने उस पताका को गिरा दिया। अपशगुन की आशंका से सेना और जनता का मनोबल टूट गया और उन्होंने विश्वासघातियों के कारण आत्मसमर्पण कर दिया।

कासिम ने देवल विजय और अत्याचार के बाद नेरुन का रुख किया, जिसके बौद्ध शासक भांडारकर सामानी ने बिना युद्ध आत्मसमर्पण कर कासिम के लिए मार्गदर्शक की भूमिका का निवेदन किया। कासिम बेत के शासकों के सहयोग से सिन्धु नदी पार कर रावर दुर्ग के निकट पहुँच गया।

एक अरब सरदार मुहम्मद बिन अलाफी ने हज्ज़ाज के अत्याचारों से परेशान होकर अपने कबीले के 500 साथियों के साथ महाराजा दाहिर के पास शरण ले रखी थी। हज्ज़ाज ने पत्र लिखकर अलाफी व साथियों की वापसी की माँग रखी थी किन्तु महाराजा दाहिर ने शरणागत रक्षा को हिन्दू धर्म के अनुसार प्रमुख कर्तव्य बताकर अस्वीकार कर दिया।

उसी अलाफी को कासिम के रावर दुर्ग के निकट पहुँचने की सूचना पर महाराजा दाहिर ने कहा ''अलाफी तुम अरब सेना के बारे में अच्छी तरह परिचित हो, इसलिए तुम हमारी सेना के साथ आगे रहो।''

इस पर अलाफी ने मुसलमान सेना के विरुद्ध तलवार उठाने से इन्कार कर दिया और वहाँ से जाने की अनुमति माँगी। महाराज ने उदारता दिखाते हुए जाने दिया, किन्तु उसने बाद में अलोर दुर्ग का दरवाजा खुलवाने का नीच कार्य किया।

महाराजा दाहिर की सेना और अरब सेना के मध्य भयंकर युद्ध हुआ। महाराजा दाहिर पाँच हजार सैनिकों और हाथियों के साथ युद्ध स्थल पर पहुँचे और प्रारम्भ से अरब सेना को पीछे धकेलकर, हतोत्साहित कर दिया। सूर्यास्त को युद्ध बन्द होने तक दाहिर की सेना ने अरबों की सेना में भय का संचार कर दिया था। अगले दिन दाहिर अपने दोनों पुत्रों जयसिंह और धरसिया तथा अनेक इष्टजन के साथ युद्ध करने आये। भयंकर युद्ध में मध्याह्न बाद दाहिर की सेना की विजय सन्निकट प्रतीत हो रही थी, अरब सेना रणस्थल से पलायन करने लगी।

तब कासिम ने एक षड़यन्त्र रचा। युद्ध के मैदान में भी राजा दाहिर धर्म, नारी एवं गौरक्षा के प्रति संवेदनशील थे। मुहम्मद बिन कासिम ने दाहिर की इसी गुणवत्ता का लाभ उठाकर कुछ बन्दी

महिलाओं और अरबी सैनिकों को महिला वेश धारण कराकर युद्ध स्थल के अलग कोने में हाहाकार करवाया कि ''बचाओ–बचाओ अरब अस्मत लूट रहे हैं।'' यह सुन नारी रक्षा धर्म का पालन करने दाहिरसेन अकेले उस दिशा में चल पड़े।

प्रजावत्सल दाहिरसेन पर कासिम ने चौतरफा आक्रमण कर दिया, आग का गोला चलाकर हाथी को घायल कर दिया। जिससे घायल गज नदी में घुस गया। दाहिरसेन असंख्य सैनिकों से वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए मातृभूमि के अमर शहीद बन गए। महाराज की शहादत के बाद अरब आततायियों से अपने सतीत्व की रक्षा करने महारानी सहित अगणित वीरांगनाओं ने जौहर को अंगीकार किया।

अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम ने महाराजा दाहिरसेन की राजकुमारी सूर्यकुमारी और परमाल को बन्दी बनाकर खलीफा के पास भेंट स्वरूप भेजा तो उन्होंने अपनी बुद्धि और त्वरित चतुरता दिखाते हुए खलीफा को कहानी गढ़कर बताया कि यहाँ भेजने से पहले कासिम ने तीन रात अपने हरम में रखा था। इस कारण हम पवित्र नहीं है। यह सुनकर खलीफा आग–बबूला हो गया।

उसने मुहम्मद बिन कासिम को सांड की खाल में सिलकर उसके समक्ष प्रस्तुत करने का आदेश दिया। खलीफा के आदेश की पालना हुई और कासिम को जिंदा ही सांड की खाल में सिलकर खलीफा के समक्ष पेश किया गया, तब तक उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। भारतीय नारी के साहस का सजीव स्वरूप हमारे समक्ष आ जाता है। वीर शिरोमणि दाहिर सेन का त्याग और उत्सर्ग आज भी प्रेरणास्पद है। राष्ट्र रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का अनुकरणीय सन्देश दाहिर सेन के जीवन से सदैव प्राप्त होता रहेगा।

शब्दार्थ

जांबाज – वीर,
शरणागत – शरण में आया हुआ,
हरम – अन्तःपुर,
न्योछावर – समर्पित करना,
गुम्बद – शिखर
शहादत– बलिदान,
कुत्सित– नीच,
उत्सर्ग– त्याग, दान,

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दाहिरसेन के राज्य की राजधानी कौनसी थी ?

(क) सिन्ध (ख) देवल
(ख) रावर दुर्ग (घ) अलोर

2. प्रजावत्सल का अर्थ है–

(क) प्रजा का पुत्र (ख) प्रजा का पुत्रवत् पालन करने वाला

(ग) प्रजा का प्रतिनिधि (ग) प्रजा का रक्षक

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. महाराजा दाहिर सेन से पूर्व सिंध के शासक कौन–कौन थे?

4. महाराजा दाहिर सेन की पुत्रियों के नाम बताइये।

5. किस अरब को दाहिर सेन ने अपने राज्य में शरण दी थी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. दाहिर सेन से पूर्व भारतीयों के अरबों से संघर्ष को स्पष्ट करो।

7. अरबों के आक्रमण की भारत में सफलता का मुख्य कारण बताइये।

8. दाहिर सेन किस षड़यन्त्र में फँस कर हारे? लिखिए

9. सूर्या और परमाल कौन थी ? उन्होंने अपनी पराजय का बदला कैसे लिया? बताइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

10 दाहिर सेन की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

11 धर्म, नारी और गौरक्षा को भारतीय मान्यता के आधार पर महत्त्वपूर्ण क्यों मानागया है ?

वस्तुनिश्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 घ

2 ख

•••

प्रेरक जीवन 2

भारतरत्न : डॉ. अब्दुल कलाम

भारतरत्न, मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति डॉ. अबुल पाकिर जैनुलआबदीन अब्दुल कलाम भारत गणराज्य के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे। विज्ञान की दुनिया से देश का प्रथम नागरिक बनने का गौरव डॉ. कलाम की समर्पित कर्मनिष्ठा का परिणाम है।

डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता जैनालुबदीन की बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी और न ही वे बहुत धनी व्यक्ति थे, परन्तु समझ और बुद्धि में श्रेष्ठ थे, उनमें उदारता की सच्ची भावना थी।

इनके पिता जी स्थानीय ठेकेदार से मिलकर लकड़ी की नौकाएँ बनाने का काम करते थे। कलाम को विरासत में पिता जी से ईमानदारी और अनुशासन तथा माँ से ईश्वर में विश्वास और करुणा का भाव मिला था।

कलाम ने प्रारम्भिक शिक्षा रामेश्वरम् के प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की । उनके शिक्षक अयादुरै सोलोमन ने बचपन में ही इन्हें कहा ''जीवन में सफल होने और उत्कृष्ट परिणाम के लिए इच्छा, आस्था और अपेक्षा को समझना और मानना आवश्यक है।'' शिक्षक की बात को आत्मसात करना आपका नैसर्गिक गुण रहा है।

अर्थाभाव से जूझते हुए भी शिक्षा को निरन्तर बनाए रखने के लिए कलाम ने अखबार वितरण का कार्य भी किया था। तिरुचापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से बी.एससी. करके इन्होंने दक्षिण भारत में तकनीकी शिक्षा के लिए मशहूर मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में प्रवेश लिया तथा वहाँ से हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड बंगलौर चले गए। वहाँ से वैमानिक अभियन्ता बनकर निकले तो इनके पास नौकरी के दो बड़े अवसर थे। एक अवसर भारतीय वायुसेना का था और दूसरा रक्षा मन्त्रालय के अधीन तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय का था।

रक्षा मन्त्रालय में चयन से आपकी नवोन्मेष अभीप्सा साकार होने लगी। इन्होंने ग्राउंड इक्विपमेंट मशीन के रूप में स्वदेशी होवर क्राफ्ट का मॉडल तैयार कर, उसका नाम 'नन्दी' दिया। प्रतिभा का प्रकाश फैलने लगा और कलाम को कार्य के नए अवसर मिलने लगे। कलाम को डॉ. विक्रम साराभाई ने भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान समिति में रॉकेट इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया।

इसके पश्चात् कलाम को सैटेलाइट लांच वैहिकल का (एस.एल.पी.) परियोजना प्रबन्धक बनाया गया। 18 जुलाई 1980 को श्री हरिकोटा रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र से एस.एल.वी. ने सफल उड़ान भरी। इस परियोजना की सफलता ने डॉ. कलाम को राष्ट्रीय पहचान दी। इस उपलब्धि पर उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

सफलता से दायित्वों का बोझ बढ़ता ही जाता है। डॉ. कलाम को रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला में गाइडेड मिसाइल डेवलपमेन्ट की जिम्मेदारी दी गयी। इस परियोजना पर कार्य करते हुए अब्दुल कलाम ने पृथ्वी, त्रिशूल, अग्नि, आकाश, नाग, ब्रह्मोस् आदि मिसाइलें विकसित की। जो जमीन से, समुद्र से तथा हवा से कहीं से भी दागी जा सकती है।

इन मिसाइलों के विकास से रक्षा क्षेत्र में भारत की न केवल ताकत बढ़ी है, अपितु विश्व मंच पर भारतीय प्रतिभा का प्रभाव भी बढ़ा है। रक्षा और अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें 1997 में 'भारत रत्न' से अलंकृत किया।

भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्म निर्भरता बढ़ाने के लिए 11 व 13 मई 1998 में राजस्थान के पोकरण में पाँच सफल परमाणु परीक्षण किए। इस सम्पूर्ण गोपनीय एवं विशिष्ट अभियान में डॉ. कलाम ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। डॉ. कलाम वर्ष 2001 तक भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे।

वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम को तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनने का आग्रह किया, जिसको स्वीकार कर राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। नब्बे प्रतिशत मतों के समर्थन से कलाम भारत के राष्ट्रपति बने। 25 जुलाई, 2002 को कलाम ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए कलाम ने भारत के विकास के स्वप्न को साकार करने का कर्म निरन्तर जारी रखा। कलाम का पाँच वर्ष का राष्ट्रपति कार्यकाल भारत के इतिहास का स्वर्णयुग है। गैर राजनीतिक व्यक्तित्व का देश के सबसे बड़े पद पर कार्य करने का प्रथम अवसर था। अपने कार्यकाल में आम जन के प्रति स्नेह, सद्भाव और संवेदना के साथ कर्तव्य के प्रति ईमानदारी और निष्ठा से आज भी जनता के राष्ट्रपति के रूप में स्मरणीय है।

डॉ. अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति पद की जिम्मेदारी से निवृत्त होने के पश्चात् भी सुख सुविधा और आराम का जीवन व्यतीत करना पसंद नहीं आया। विजन 2020 के जरिए भारत को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र के रुप में देखने की उत्कट लालसा थी। कलाम का मानना था उन्होंने विजन 2020 का जो सुनहरा स्वप्न संजो रखा है उसे साकार करने में युवा शक्ति पूरी तरह समर्थ है ।

इसलिए उन्होंने राष्ट्रपति भवन की चहार दीवारी से बाहर आने के बाद देशभर में प्रवास करना प्रारम्भ किया। विद्यालयों, महाविद्यालयों और प्रबंधन संस्थानों में वे अपने व्याख्यानों से ऐसी छाप छोड़ते थे कि मानो कक्षा में कोई पूर्व राष्ट्रपति नहीं, बल्कि एक कोई धीर गम्भीर शिक्षक व्याख्यान दे रहा हो, जिसके पास ज्ञान का अपार भंडार हो। वे युवाओं के लिए एक दैदीप्यमान प्रकाश स्तम्भ थे। उनके प्रेरणास्पद विचार सुनने वाले युवकों को डॉ. कलाम में एक सच्चे पथ प्रदर्शक के दर्शन भी होते थे।

डॉ. कलाम केवल व्याख्यान ही नहीं देते थे बल्कि छात्रों की जिज्ञासाओं को भी तत्काल शांत करने के लिए तत्पर रहते थे। उनकी एक अभिलाषा थी कि सदैव उन्हें एक अध्यापक के रूप में याद किया जाए और जिस विधाता ने उन्हें यशस्वी जीवन का वरदान देकर इस पावन भूमि पर भेजा था उस विधाता ने उनकी यह इच्छा भी पूर्ण की। इसे अद्भुत संयोग कहना ही उचित होगा कि 25 जुलाई 2015 को कलाम ने आई. आई. एम. शिलांग के छात्रों के समक्ष अपना व्याख्यान देते हुए ही इस संसार को अलविदा कह दिया।

डॉ. कलाम सच्चे अर्थो में कर्मयोगी थे। वे गीता के नियमित अध्येता थे। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की थी कि उनके निधन पर कोई अवकाश घोषित न किया जाए और लोग उस दिन अधिक काम करें। इसलिए पूर्व राष्ट्रपति के निधन पर कोई अवकाश घोषित नहीं किया गया। उनको हमारी श्रद्धांजलि तो यह होगी कि जिसका जो काम है उसमें वह समर्पित भाव से जुटा रहे। भारत सरकार ने नई दिल्ली में औरंगजेब रोड़ का नाम बदल कर डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम मार्ग कर दिया है। राजस्थान सरकार द्वारा डॉ. कलाम के जन्म दिवस को ' विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है।

डॉ. कलाम आज हमारे बीच नहीं है, परंतु उनका प्रेरणादायी व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमें हमेशा स्मरण दिलाता रहेगा कि संघर्षों में पला बढ़ा व्यक्ति भी अगर आगे बढ़कर कुछ कर दिखाने की ठान ले तो कठिन से कठिन बाधाएँ भी उसका रास्ता नहीं रोक सकती। इसलिए वे हमेशा युवकों से कहा करते थे कि ''हमेशा बड़े सपने देखो, छोटे सपने देखना अपराध है। जिन्दगी में वहीं स्वप्न साकार होते हैं जो खुली आँखों से देखे जाते हैं। ऐसे सपनों को पूरा करने के लिए मन में जुनून होना चाहिए और असफलता से कभी घबराना नहीं चाहिए क्योंकि असफलता तो सफलता की दिशा में पहला प्रयास है।''

शब्दार्थ

नैसर्गिक – प्राकृतिक, स्वाभाविक
दायित्व – जिम्मेदारी
स्मरणीय– याद रखे जाने योग्य
नवोन्मेष– नया करने की इच्छा
निर्वहन– पूरा करना
ठान लेना– संकल्प करना

अभ्यासार्थ–प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. अब्दुल कलाम भारत के कौन से राष्ट्रपति थे ?

(क) बारहवें (ख) दसवें
(ग) ग्यारहवे (घ) तेरहवें

2. डॉ. कलाम ने स्वदेशी होवर क्राफ्ट का क्या नाम रखा था ?

(क) अग्नि (ख) त्रिशूल
(ग) पृथ्वी (घ) नन्दी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. डॉ. अब्दुल कलाम का पूरा नाम क्या है ?
4. डॉ. कलाम ने बी.एससी. की शिक्षा किस संस्था से अर्जित की थी?
5. एस.एल.वी ने सफल उड़ान कब भरी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. डॉ. अब्दुल कलाम को मिसाइल मैन क्यों कहते हैं?
7. डॉ. कलाम के वैज्ञानिक क्षेत्र में योगदान पर प्रकाश डालिए।
8. डॉ. कलाम ने 'विज़न 2020' को साकार करने के क्या प्रयास किए?

निबन्धात्मक प्रश्न

9. 'भारत रत्न कलाम' का जीवन विद्यार्थी जीवन के लिए किस प्रकार प्रेरक है? स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ग

2. घ